

डा० मेन राजनीति से हट कर, शिक्षा शास्त्री के रूप में बतलायें, शुक्ला साहब उन्हें जो परामर्श दे रहे हैं, उस को न मानें।

DR. TRIGUNA SEN : The report of the Cabinet Sub-Committee will be placed before the Cabinet. What has been discussed in the Cabinet. I am not supposed to divulge.

SHRIMATI SUSHILA ROHATGI : The affairs of the Aligarh Muslim University have come in for strong criticism from time to time. On that basis, may I know (a) what is the proportion of the Hindu students and the Muslim students in the University; (b) whether the Government is prepared to delete the word "Muslim" from the "Aligarh Muslim University" and give it a truly universal character; and (c) whether the Government is prepared to appoint a committee of all parties to go into the matters and investigate the real state of affairs there ?

DR. TRIGUNA SEN : As to the first question, about the percentage of non-Muslim students in the University. I have not got the exact figure with me, but I am definite it is half and half—about 50 per cent; maybe there are more Hindus, I do not know. I had been there, but I did not enquire into the actual numbers. Regarding the second point. I was told that when this House tried to remove the name "Hindu" from the "Benaras Hindu University", there was a lot of trouble inside and outside the House. Government do not propose any change now. Regarding the third point, it is not necessary to enquire into the activities of the Aligarh Muslim University, because there is nothing wrong in the University's activities now, which requires any enquiry.

SHRI J. M. BISWAS : Are you considering the deletion of both the names, "Hindu" and "Muslim" ?

MR. SPEAKER : Order, order. That is a bigger question.

श्री रामगोपाल शालवाले : क्या यह सच है कि अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय से सम्बन्धित

इन्जीनियरिंग कालेज के कई सौ स्नातक पाकिस्तान चले गये हैं ? क्या यह भी सच है कि अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के इलैक्ट्रिकल इन्जीनियरिंग कालेज के रीडर बिना किसी को सूचित किये पाकिस्तान चले गये और उन्होंने वहीं अपनी भविष्य निधि की राशि प्राप्त करने का प्रबन्ध कर लिया था ?

श्री भागवत झा याजाब : यह बात सच है कि जो विद्यार्थी अलीगढ़ विश्वविद्यालय से पास कर चुके हैं, उन में से कुछ पाकिस्तान गये हैं। लेकिन इस में इस प्रश्न का कोई सम्बन्ध नहीं उठता।

उत्तर प्रदेश के विश्वविद्यालयों तथा कालेजों में अनुशासनहीनता

*874. श्री प्रकाशबीर शास्त्री :
श्री शिवकुमार शास्त्री :

क्या शिक्षा मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि उत्तर प्रदेश के कुछ विश्वविद्यालयों और कालेजों में अनुशासनहीनता निरन्तर बढ़ती जा रही है ;

(ख) क्या यह भी सच है कि थोड़ी संख्या में इन अनुशासनहीन विद्यार्थियों की गतिविधियों के कारण नियमित रूप से अपना अध्ययन जारी रखने वाले विद्यार्थियों के लिये भी बड़ी कठिनाइयां खड़ी हो गई हैं ;

(ग) क्या यह भी सच है कि शिक्षा संस्थाओं में गड़बड़ी फैलाने में कुछ राजनैतिक दलों तथा व्यक्तियों का भी हाथ है ; और

(घ) यदि हां, तो इन प्रवृत्तियों को रोकने के लिये सरकार का क्या उपाय करने का विचार है ?

शिक्षा मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री भागवत झा याजाब) : (क) पास वैश्वविद्यालयों में उत्तर प्रदेश के कुछ एक विश्वविद्यालयों

और कालेजों में विद्यार्थियों द्वारा गड़बड़ी की घटनाएं हुई हैं।

(ख) जी हां।

(ग) यद्यपि कुछ विद्यार्थी जो कि राजनीति की ओर झुके हुए हैं इस गड़बड़ी के लिए उत्तरदायी हैं तथापि यह कहना कठिन है कि कुछ राजनीतिक दल या व्यक्ति इस गड़बड़ी को उत्पन्न करने के लिए प्रत्यक्ष रूप से उत्तरदायी हैं।

(घ) राज्य सरकार घटनाओं पर बराबर सतर्कता से ध्यान दे रही है और कानून मंग करने वालों के विरुद्ध उचित कार्यवाही कर रही है।

श्री प्रकाशबीर शास्त्री : अध्यक्ष महोदय, विश्वविद्यालयों और कालेजों में जिन छात्र संघों का निर्माण किया जाता है, वह प्रायः इस दृष्टि से होता है कि छात्र मविपय के लिये अपने दायित्व का छात्रावस्था में ही अनुभव करना प्रारम्भ कर दें। लेकिन कुछ दिनों से उत्तर प्रदेश और दूसरे राज्यों में जिनमें उत्तर प्रदेश में अधिक—यह प्रवृत्ति प्रारम्भ हो गई है कि वहाँ छात्र संघों के जो चुनाव होते हैं, उन में बाहर के राजनीतिक दल विधिवत भाग लेते हैं। बाहर से उनको पैसा दिया जाता है और दलों के आधार पर चुनाव लड़े जाते हैं, मैं जानना चाहता हूँ कि क्या उत्तर-प्रदेश में जो कुछ उपद्रव हो रहा है, इसका बहुत बड़ा कारण यह है कि राजनीतिक पार्टियाँ उन चुनावों में विधिवत भाग लेती हैं? यदि हाँ, तो शिक्षा मंत्रालय की इस सम्बन्ध में क्या प्रतिक्रिया है? क्या इसको कोई व्यवस्थित और सुनियोजित रूप देने के लिये शिक्षा मंत्रालय विचार कर रहा है?

श्री भागवत भा आजाद : शिक्षा मंत्रालय की यह निश्चित राय है कि राजनीतिक पार्टियों को विश्वविद्यालय की कार्यविधियों में भाग नहीं लेना चाहिये और यदि यह सही है कि विभिन्न राजनीतिक पार्टियाँ विश्वविद्यालय के इन

चुनावों में भाग लेती हैं, तो यह तभी ठीक होगा जब ये राजनीतिक पार्टियाँ स्वयं विचार करें कि वे विश्वविद्यालय में दखल न दें।

श्री प्रकाशबीर शास्त्री : क्या यह सत्य है कि उत्तर प्रदेश के विश्वविद्यालयों में पिछले कुछ वर्षों से जो आन्दोलन और उपद्रव हुए हैं, उसका एक बहुत बड़ा कारण यह भी रहा है कि इन विश्वविद्यालयों के उपकुलपतियों का निर्वाचन करते समय शिक्षा शास्त्रियों की अपेक्षा राजनीतिज्ञों को विशेष रूप से प्रमुखता दी गई। राजनीतिज्ञ जहाँ जाते हैं अपने ढंग से वहाँ के वातावरण को बनाने का प्रयास करते हैं? यदि हाँ, तो मविपय में क्या इस के लिए भी शिक्षा मन्त्री कोई परम्परा निर्धारित करने जा रहे हैं कि हमारे जितने विश्वविद्यालय हैं, इनके उपकुलपति शिक्षा शास्त्री हों? राजनीतिज्ञों को कृपा कर इन विश्वविद्यालयों से दूर रखा जाय।

दूसरा प्रश्न—क्या इन छात्र आन्दोलनों का बहुत बड़ा कारण यह भी है कि उत्तर प्रदेश के अध्यापकों के अन्दर असन्तोष फैला हुआ है? आजकल उत्तर प्रदेश के राज्यपाल यहाँ आये हुए हैं। क्या शिक्षा मन्त्री महोदय की उनसे कोई बातचीत हुई है? यदि हुई है, और उस का कोई मुप रणाम निकला है तो आज लोक सभा का अन्तिम दिन है। उसकी भी जानकारी हमें दें।

श्री भागवत भा आजाद : अध्यक्ष महोदय, हमने इस बात पर बराबर जोर दिया है कि तमाम राज्यों में उपकुलपतियों को बहाल करते समय, राज्य सरकारें शिक्षा शास्त्रियों को ही देखें, राजनीतिज्ञों को नहीं। एड्रोकेशन कमीशन ने भी इसी तरह की सिफारिश की है और इस सिफारिश की ओर भी हमने राज्य सरकारों का ध्यान आकर्षित किया है। इस समय उत्तर प्रदेश के विश्वविद्यालयों में जो उपकुलपति हैं, वे सभी शिक्षा शास्त्री हैं, लेकिन फिर भी असन्तोष है।

जहां तक विश्वविद्यालयों के अध्यापकों के वेतन मान का प्रश्न है, वह तो पूरा ठीक कर लिया गया है। लेकिन जहां तक दूसरे अध्यापकों का प्रश्न है, हम उनसे बातचीत कर रहे हैं, अभी इस सम्बन्ध में मैं कुछ नहीं कह सकता हूँ।

श्री प्रकाशश्री शास्त्री : वे यहां आये हुए हैं, कुछ तो कह दीजिये।

श्री भागवत झा आज़ाद : अभी बातचीत हो रही है, कंसे बतलाऊँ।

श्री शिव कुमार शास्त्री : अध्यक्ष महोदय, मैं आपके द्वारा शिक्षा मन्त्री जी से जानना चाहता हूँ कि ता० 14 की विश्वविद्यालय से सम्बन्धित चर्चा में श्री प्रकाशश्री शास्त्री ने यह रहस्य उघाटन किया था कि कुछ इस प्रकार के विद्यार्थी हैं जो प्रतिवर्ष असफल होते रहते हैं और फिर भी वहां इस लिये प्रविष्ट हैं कि उनको किसी दूसरे स्थान से आर्थिक सहायता मिलती है। क्या आपने इस विषय में कोई जांच की है? यदि की है, तो उसके परिणाम क्या हैं?

दूसरे, आज जिस तरह का शिक्षा का ढांचा है, क्या आप उसमें कोई परिवर्तन करने के बारे में सोच रहे हैं? क्या कोई इस प्रकार का मौलिक और रचनात्मक प्रयोग आप करने जा रहे हैं जिससे श्रद्धा, आस्था और पवित्रता की भावना विश्वविद्यालयों के प्रति छात्रों के हृदयों में पैदा हो और वे स्वयं ही अनुशासन में रहने के लिये प्रेरित हों?

श्री भागवत झा आज़ाद : अध्यक्ष महोदय, यह बात सही है कि विश्वविद्यालयों में ऐसे विद्यार्थी हैं जो कि बहुत बार असफल हुए हैं लेकिन फिर भी विद्यार्थी बने हुए हैं परन्तु उनको कोई राजनीतिक पार्टी सहायता देती है, इस सम्बन्ध में हमको कोई जानकारी नहीं है।

जहां तक ऐसी शिक्षा नीति होने का सम्बन्ध है बिना कि विद्यार्थियों में देश के प्रति

श्रद्धा और आदर की भावना पैदा हो तो उसमें कोई दो मत नहीं हो सकते हैं, और हमने जो शिक्षा नीति निर्धारित की है उसमें इस बात पर बल दिया है और तमाम राज्य सरकारों का ध्यान इस ओर आकृष्ट किया है कि इस तरह के कान करें जिससे यह चीज सम्भव हो सके।

श्री प्रकाशश्री शास्त्री : कुछ विद्यार्थियों को तो इसी काम के लिए पैसा मिलता है।

SHRIMATI SAVITRI SHYAM : Is Government in a position to name the political parties which are found to be disrupting and creating trouble in universities as well as in industrial areas not only in Uttar Pradesh but in the whole of India (Interruption) ?

श्री भागवत झा आज़ाद : अध्यक्ष महोदय, मैंने मूल प्रश्न के उत्तर में बताया है कि यद्यपि कुछ विद्यार्थी जो कि राजनीति की ओर झुके हुए हैं वे इस प्रकार की गड़बड़ी के लिए उत्तरदायी हैं लेकिन हमारे लिए यह कहना कठिन है कि कुछ राजनीतिक दल या व्यक्ति विशेष इस काम को कर रहे हैं।

श्री लोभो प्रभु : मैं अपने आपको यू० पी० का वाशिन्दा मानता हूँ क्योंकि मेरी 15 साल की जिन्दगी वहां पर गुजरी है। After this introduction(Interruption).

SHRI KANWAR LAL GUPTA : He got a fit of Hindi. Now he is continuing his question in English.

SHRI LOBO PRABHU : I would like to enquire from the hon. Minister whether it has been brought to his notice that the student trouble in U.P. and for that matter in India, is largely due to the despair of students about their employment opportunities; not only are these decreasing but they are not keeping pace with the output of our universities and schools. In these circumstances, I would like also to make this enquiry, because of my special affection for U.P. whether the U.P. students are not

particularly prejudiced because of the fact that they are only proficient in Hindi. Hindi being the medium of instruction in universities there, and they find that their employment opportunities are restricted to UP only and opportunities are not available in the rest of the country.

SHRI BHAGWAT JHA AZAD : The various committees and inquiries, which have been set up to find out the reasons, have certainly said that lack of employment opportunities is one of the reasons for the frustration of students. So far as the hon. Members's anti-Hindi tirade is concerned, this is not the reason.

SHRI CHINTAMANI PANIGRAHI : As the hon. Minister has just now said, there is frustration among a vast number of students in this country today. I would like to know from the hon. Minister whether it is not a fact that the various inquiries which have been made to assess the problems of students in different universities, have come to the conclusion that there are no text books for at least 35 percent of the students, that there is no accommodation for at least 40 per cent of the students and that there is not even any arrangement for introducing a kind of academic atmosphere in the universities amongst the academicians themselves, leave aside the students. In view of all this assessment, I would like to know from the hon. Minister of Education whether, instead of trying to solve the problem administratively, they are trying to see that all these difficulties which are facing the student mass of this country and which will face them in the coming three or four years are removed and that they are going to have some long-range solution so as to tackle this problem psychologically instead of meeting it administratively.

SHRI BHAGWAT JHA AZAD : Only a few days ago there was a two-hour discussion on student unrest in this House and all these points, including the lack of opportunity for employment, accommodation not being sufficient in hostels etc. were raised. We had stated our viewpoint then; we agreed with them that certainly we should have a broader perspective plan to remove them.

SHRI CHINTAMANI PANIGRAHI : What is the immediate plan before them ?

SOME HON. MEMBERS *rose-*

MR. SPEAKER : Do you want to continue this question ? There are other important questions also. Only the other day, we had a discussion for 2 hours. There are so many persons getting up. I do not know how I can call anyone of you. If you permit me, I go to the next Question.

SHRI S. KUNDU : Mr. Joshi, the Vice - Chancellor of the University has issued a statement. This is an important matter. The Minister should throw some light on that.

Enquiry against Secretary of Indian Council for Cultural Relations

*875. **SHRI ONKAR LAL BERWA :**
SHRI YASHPAL SINGH :

Will the Minister of EDUCATION be pleased to state :

(a) whether the Governing Body of the Indian Council for Cultural Relations have investigated the charges against the Secretary of the Council;

(b) if so, whether the report of the investigations has been submitted to Government; and

(c) the reaction of Government there to ?

THE MINISTER OF STATE IN MINISTRY OF EDUCATION (SHRI BHAGWAT JHA AZAD) : (a) The Governing Body of the Indian Council for Cultural Relations has set up a Committee to enquire into the charges against the Secretary, Indian Council for Cultural Relations.

(b) No, Sir.

The report of the Enquiry Committee will be submitted to the Governing Body of the Indian Council for Cultural Relations.

(c) Does not arise.